POINTER

Pointer Publishers

807, Vyas Building, Chaura Rasta, Jaipur 302 003 (Raj.)
Phone : 0141-2578159 • e-mail : pointerpub@hotmail.com • www.pointerpublishers.com

Latest List of Books in History and Indian Culture

Annie Besant : Founder of Home Rule Movement
Kumar, Raj 81-7132-321-9 2003 450.00

Armed Forces in British India
Pruthi, R. 81-7132-178-X 1998 600.00

Aruna Asaf Ali : Eminent Indian Woman
Rajkumar 81-7132-271-9 2011 550.00

अकबर महान और उसका युग
मांडोत, डी. 978-81-7910-377-7 2012 1150.00

अकबर एक साम्राज्यवादी और महत्त्वाकांक्षी सम्राट् था। सिंहासनारोहण के समय साम्राज्य अस्त-व्यस्त था, आर्थिक स्थिति दयनीय थी, विद्रोहों की आशंका थी। उसने प्रारम्भिक कठिनाइयों का निराकरण कर पानीपत के द्वितीय युद्ध में हेमू को परास्त किया। बैरामखाँ के संरक्षण में प्रारम्भिक विजयें प्राप्त कीं और जब स्वयं सम्प्रभु बन गया तो सम्पूर्ण उत्तरी भारत, पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त और दक्षिण भारत में भी साम्राज्य का विस्तार किया। राजपूतों के प्रति मैत्री की नीति और वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर उन्हें साम्रा%य की ढाल बनाया। मेवाड़ के राणा प्रताप को अधीनता स्वीकार कराने में विफल रहा। धार्मिक क्षेत्र में सहिष्णुता की नीति को अपनाया। शहजादा सलीम के विद्रोह का दमन किया। सम्पूर्ण देश में एक-सी शासन व्यवस्था की, मनसबदारी प्रथा, भू-राजस्व सम्बन्धी सुधारों सहित अनेक प्रशासनिक सुधारों को लागू किया। साहित्य और कला के विकास में भरपूर सहयोग दिया। शिक्षा का समुचित प्रबन्ध किया, सामाजिक सुधार कार्यों को मूर्त रूप दिया एवं लोगों के साथ समानता का व्यवहार और उचित न्याय किया। इन्हीं प्रयासों से वह मध्यकालीन भारतीय शासकों में महान् और अविस्मरणीय बन गया। इन्हीं सभी तथ्यों को इस कृति में समाहित किया गया है।

Bhagat Singh : The Prince of Martyrs
Mathur, L.P. 81-7910-021-9 2011 500.00

British Colonial Policy Towards Indian States
Pruthi, R. 81-7132-177-1 1998 525.00

British Rule in India, in 2 Vols.
Pruthi, R. 81-7132-294-6 2007 1000.00

Crafts and Craftsmen
Mathur, K. 81-7132-367-7 2014 995.00

Cultural Heritage of India
Bhandari, N.K. 978-81-7910-218-3 2007 700.00

Family in the Mahabharata
Tiwari, K.P. 81-7132-149-6 2011 995.00

Foundations of Indian Culture
Tiwari, K.P. 81-7132-250-6 2007 700.00

Gandhism: a Vision for Peace
Chaturvedi, S. 978-81-7132-549-8 2014 800.00

Historic Battles of India : A Study in Military Science
Asthana, N.C. 978-81-7910-471-2 2014 2800.00

India has a very long history of wars and warfare. Our kings and badshahs were always dressed with a sword and habitually fought with their neighbours almost every year.

It is the most exhaustive book on military history and science in the whole world. Anything that is important in the history of India from a military angle is to be found here. This book covers an unprecedented 103 historic battles starting from Alexander's invasion and ending with the battles of the Mutiny. These were the battles that changed the course of our history and shaped our destiny. It covers all the important battles of India in the ancient, medieval and modern periods, including:

• Mauryan age • Gupta age • Arab invasions • Mahmud Ghaznavi and Muhammad Ghori • Sultanate period • Mughal Empire • Marathas • East India Company • Mutiny of 1857

History, Society & Culture in Ancient India, in 2 Vols.
Pruthi, R. 81-7132-197-6 2008 1500.00

History, Society & Culture in Modern India, in 2 Vols.
Pruthi, R. 81-7132-170-4 2008 1500.00

Later Mughals : Their Decline and British Ascent
Asthana, N.C. 978-81-7132-778-2 2014 2500.00

Covering the entire period from the death of Aurangzeb to the Mutiny of 1857, it contains, amongst other things, a vast quantity of material on: Role of Aurangzeb in the decline of the Mughal empire • Bahadur Shah • The Rajput and Sikh revolts • Jahandar Shah; Farrukhsiyar and the Sayyid brothers • Muhammad Shah and the Nizam-ul-Mulk • The rise of the Marathas • The invasion of Nadir Shah • Mughal emperor Ahmad Shah and the invasions of Ahmad Shah Abdali • Alamgir II and Shah Alam II • The Third Battle of Panipat • Armies of the later Mughals • Various reasons of the decline of the Mughal empire • The East India Company, its wars and exploitation • The 1857 Mutiny; reasons of occurrence and analysis of critical battles · Bahadur Shah Zafar

This book will be immensely useful to students of history, research scholars, professors, media persons and even lay men interested in the history of a critical period of our nation.

Indian Statutory Commission, in 2 Vols.
Simmon Commission 1988 750.00

Industry Trade & Commerce During Peshwa Period
Mahajan, T.T. 81-7132-009-0 1989 350.00

Islamic Fundamentalism and Modernity
Khan, A.S. 81-7910-125-8 2005 595.00

Mahatma Gandhi and Problem of Communalism
Arya, P.K. 978-81-7132-561-0 2008 400.00

Netaji Subhas Chandra Bose
Das, H.H. 81-7132-127-5 1997 450.00

National Movement in a Princely State
Mishra, S.C. 81-7132-073-2 1993 325.00

Out of the Harem
Singh, J. 81-7910-015-4 2002 900.00

Peasant Movements in Rajasthan
Sharma, B.K. 81-7132-024-4 1990 275.00

आधुनिक भारतीय संस्कृति, द्वितीय संशोधित संस्करण
नागोरी, एस.एल. 978-81-7132-691-4 2012 850.00
आधुनिक भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य देशों के सम्पर्क के कारण कई महत्वपूर्ण परिणाम हुए, उनका सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में क्या प्रभाव पडा, इसका विस्तृत विवेचन इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त शिक्षा, साहित्य, कला का विकास, राष्ट्रीय एकता की समस्या, छात्र असंतोष एवं भारत को अंग्रेजी शासन की देन आदि विषयों पर भी विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। यह इस दृष्टि से भी प्रथम एवं एकमात्र कृति है कि इसमें पहली बार आधुनिक भारतीय संस्कृति के समस्त पक्षों का विशद् विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

Perspectives on Modern Economic & Social History
Sharma, B.K. 81-7132-187-9 2008 500.00

The Princes of India and Nepal
Barton, S.W. 81-7132-150-X 2007 600.00

Rich Heritage of Ancient India
Nair, J. 81-7132-190-9 2011 400.00

Sister Nivedita : Social Revolutionary
Kumar, Raj 81-7132-324-3 2003 525.00

Social & Cultural History of Modern India
Pruthi, R. 81-7132-196-8 2008 650.00

The Decisive Battles of India
Malleson 1986 500.00

The Indian Renaissance & Raja Rammohan Roy
Das, H.H. 81-7132-101-1 1995 400.00

The Jat Rulers of Upper Doab
Singh, J. 81-7910-016-2 2002 720.00

Traditions and Culture in Ancient India
Rajurkar, C.G. 81-7132-201-8 2008 600.00

Tradition and Modernity Among Indian Women
Devi, S. 81-7132-174-7 2008 400.00

Tribal Revolts
Sharma, B.K. 81-7132-120-8 1996 400.00

Tribal Revolts in India Under British 'Raj'
Mathur, L.P. 81-7910-079-0 2004 500.00

Twentieth Century World
Mathur, L.P. 81-7910-070-7 2014 800.00

प्राचीन भारतीय संस्कृति, द्वितीय संशोधित संस्करण
नागोरी, एस.एल. 978-81-7132-689-1 2012 850.00
प्राचीन युग में विश्व के अनेक देश जब अन्धकारमय जीवन व्यतीत कर रहे थे, तब भारत विश्व गुरु की भूमिका का निर्वाह करते हुए एशिया के कई देशों में अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रसार कर रहा था। आज विश्व की अधिकांश संस्कृतियां काल के गाल में समा चुकी है, परन्तु भारतीय संस्कृति काल के क्रूर थपेडों को झेलती हुई आज तक जीवित है। मैंने इस छोटी सी कृति में भारतीय संस्कृति के समुज्जवल स्वरूप का एक समग्र चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यही नहीं विषय-वस्तु को बड़े ही सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, ताकि पुस्तकों को पढ़ते समय पाठकों को ऐसा लगे कि प्राचीन भारतीय संस्कृति और कला का सजीव चित्र उनके सामने उपस्थित हो गया है।

Vedic Traditions and Rituals
Pruthi, R. 81-7132-240-9 2000 550.00

Vijaya Lakshmi Pandit : Great Daughter of India
Rajkumar 81-7132-270-0 2011 600.00

Women and Social Revolution
Padma, I. 978-81-7132-504-7 2007 600.00

Women & the Indian Freedom Struggle, in 7 Vols.
Rajkumar 81-7132-160-7 1998 3500.00

Women's Movement and Freedom Struggle
Rajkumar 81-7132-273-5 2011 550.00

Women's Role in Indian National Movement
Kumar, Raj 81-7132-322-7 2003 550.00

आधुनिक भारत के ऐतिहासिक निबन्ध
त्रिपाठी, निरजंन 81-7910-045-6 2007 550.00

आधुनिक भारत के इतिहासकार व उनकी ऐतिहासिकी
माथुर, एल.पी. 81-7910-104-5 2014 600.00

उन्नीसवीं शताब्दी में सामाजिक परिवर्तन
कन्छल, एम. 81-7132-168-2 2008 450.00

एनी बेसेंट एवं भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन
नागोरी, एस.एल. 81-7132-099-6 2008 250.00

दो विश्व युद्धों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति
मांडोत, एम.एल. 978-81-7910-458-3 2014 800.00

गाँधी चिन्तन
चौधरी, आर.के. 978-81-7910-465-1 2014 650.00

गाँधी चिन्तन में राष्ट्रवाद
शर्मा, बी. 978-81-7910-349-4 2011 495.00

गुप्तोत्तरकालीन भारत
नागोरी, एस.एल. 978-81-7132-536-8 2016 850.00

जैन धर्म एवं संस्कृति
गोदिका, एन. 81-7910-127-4 2014 450.00

नंद-गुप्तयुगीन भारत
नागोरी, एस.एल. 978-81-7132-535-1 2016 850.00

प्राचीन भारत का वृहत इतिहास, तीन भागों में
नागोरी, एस.एल. 978-81-7132-506-1 2016 2500.00

पानीपत के तीन निर्णायक युद्ध

मांडोत, डी. 978-81-7910-345-6 2011 350.00

भारतीय इतिहास में पानीपत के मैदान में तीन निर्णायक युद्ध लड़े गए और इन तीनों युद्धों ने भारतीय इतिहास को एक नया मोड़ दिया। प्रथम युद्ध 1526 ई. में दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी और बाबर के मध्य हुआ, जिसके कारण बाबर 16वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य का संस्थापक बना। दूसरा युद्ध नवम्बर, 1556 ई. में मुगल सम्राट् अकबर और हिन्दू सम्राट् हेमू के मध्य लड़ा गया जिसमें मुगलों की विजय हुई। इस युद्ध से मुगल साम्राज्य की न केवल पुनर्स्थापना और विस्तार हुआ, अपितु मुगलों को एक दीर्घावधि तक भारत में स्थायी शासन करने का अवसर मिला। तीसरा युद्ध जनवरी, 1761 में मराठों एवं अहमदशाह अब्दाली के बीच हुआ, जिसमें अब्दाली विजयी रहा। इस युद्ध में मराठों और मुसलमानों ने एक-दूसरे को शक्तिहीन करके अंग्रेजों को भारत में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कराने में सहायता दी। प्रस्तुत पुस्तक में पानीपत के तीनों युद्धों के पूर्व की परिस्थितियों, युद्ध के कारणों, युद्ध की घटनाओं, उनके परिणामों एवं प्रभावों का ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे यह पुस्तक इतिहास के अध्येताओं एवं सामान्य पाठकों के लिए उपयोगी, रुचिकर और महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सके।

प्राचीन भारत के ऐतिहासिक निबन्ध

श्रीवास्तव, दिवाकर लाल 81-7910-046-4 2007 550.00

प्राचीन भारत में समाज, धर्म कला एवं वास्तुकला

गुप्त, आर.के. 81-7132-380-4 2007 900.00

प्राचीन भारत में समाज व राज्य

भारद्वाज, के. 81-7132-188-7 2008 400.00

भारतीय संस्कृति के मुख्य आयाम

मांडोत, एम.एल. 978-81-7910-384-5 2012 1100.00

विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक भारतीय सभ्यता और संस्कृति में-जाति व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, संयुक्त परिवार प्रथा, वर्णाश्रम, सौलह-संस्कार, विवाह, धार्मिक व्यवस्था, वेद-पुराण, उपनिषद्, गीता, रामायण और महाभारत जैसे आधारभूत ग्रन्थ, धर्मनिरपेक्षता, समन्वयवादिता, विविधता में एकता, सामाजिक समरसता, मानव मात्र के प्रति सहिष्णुता का भाव आदि अनेक ऐसे तथ्य समाहित हैं, जिनके कारण अनेक झंझावातों एवं बाह्य आक्रमणों के बावजूद यह संस्कृति न्यूनाधिक परिवर्तन के साथ आज भी अपने मौलिक रूप में विद्यमान है। **अनुक्रम** • भारतीय संस्कृति : अर्थ, स्वरूप एवं विशेषताएँ • वैदिक धर्म • जैन धर्म • बौद्ध धर्म • भक्ति आन्दोलन और भारतीय संस्कृति पर उसका प्रभाव • भारत में इस्लाम धर्म एवं सूफी मत • सामाजिक संगठन - वर्ण, आश्रम एवं परिवार • भारतीय साहित्यिक सम्पदा (वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, तुलसीदास एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर) • भारतीय कला का सर्वेक्षण (बौद्ध कला एवं स्थापत्य, अजन्ता, हिन्दू मन्दिर स्थापत्य, मुगल स्थापत्य कला) • भारत का विज्ञान के प्रति योगदान (आर्यभट्ट, वराहमिहिर, चरक, जगदीश चन्द्र बोस एवं सी.वी. रमन) • भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य प्रभाव व भारत में सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन (ब्रह्म समाज, आर्य समाज एवं रामकृष्ण मिशन का योगदान) • संदर्भ ग्रन्थ सूची

भारतीय संस्कृति

कासलीवाल, के. 81-7910-056-1 2003 80.00

भारत की महिला स्वतन्त्रता सेनानी

माथुर, एल.पी. 978-81-7910-299-2 2009 450.00

भारतीय इतिहास का वैदिक युग

नागोरी, एस.एल. 978-81-7132-534-4 2016 850.00

भारतीय संस्कृति का वृहत् इतिहास, तीन भागों में

नागोरी, एस.एल. 978-81-7132-675-4 2016 2500.00

भारतीय संस्कृति एवं विरासत

माथुर, कमलेश 978-81-7132-528-3 2014 800.00

भारतीय संस्कृति के मूल आधार

भारद्वाज, के. 81-7132-313-8 2007 700.00

मध्यकालीन भारत के ऐतिहासिक निबन्ध

द्विवेदी , राजीव 81-7910-048-0 2016 625.00

मध्यकालीन भारत का सम्पूर्ण इतिहास, दो भागों में

नागोरी, एस.एल. 81-7132-070-8 2011 750.00

मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, द्वितीय संशोधित संस्करण

नागोरी, एस.एल. 978-81-7132-690-7 2012 850.00

इस पुस्तक में मध्यकालीन भारत के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शिक्षा साहित्य एवं विभिन्न ललित कलाओं आदि पहलुओं के क्रमिक विकास का विस्तार से वर्णन किया गया है। इतना ही नहीं, भारतीय संस्कृति और इस्लाम का परस्पर प्रभाव तथा मध्यकाल में अकबर, दार शिकोह, सूफियों एवं भक्ति आन्दोलन के संतों द्वारा हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए किये गये प्रयासों का भी ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विशद् विवेचन प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत रचना को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है, ताकि न केवल पाठकगण अपितु जिज्ञासु विद्यार्थियों को भी मध्यकालीन भारतीय संस्कृति के तत्वों को समझने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो। इस पुस्तक में तथ्यों के नवीन शोध के प्रकाश में नवीन दृष्टिकोण के अनुसार प्रस्तुत किया गया है।

मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला

गुप्त, आर . के. 81-7132-347-2 2007 700.00

महात्मा गाँधी और एम.एन. रॉय : तुलनात्मक अध्ययन

भारद्वाज, के. 978-81-7132-608-2 2009 400.00

मौलाना अबुल कलाम आजाद

नागोरी, एस.एल. 81-7132-117-8 2008 300.00

राजस्थान में पुलिस प्रशासन

सिंघल, पी. के. 81-7132-123-2 1996 300.00

राजस्थान का इतिहास

नागोरी, एस.एल. 81-7132-223-9 2007 375.00

राजस्थान निर्माण के पचास वर्ष, दो भागों में

नाटाणी, पी.एन. 81-7132-237-9 2000 1250.00

राजा राममोहन राय : व्यक्ति और विचार

शर्मा, बी.डी. 978-81-7132-730-0 2013 180.00

मुगल सम्राट जहाँगीर और उसका युग

मांडोत, डी. 978-81-7910-381-4 2012 700.00

मुगल सम्राट जहाँगीर ने 1605 से 1627 ई. तक लगभग 22 वर्ष तक भारतवर्ष पर शासन किया। सिंहासनारोहण के तुरन्त बाद सभी जातियों और वर्षों की सहानुभूति प्राप्त करने हेतु बारह अध्यादेश जारी किए। सिंहासनारोहण के कुछ समय बाद ही उसने खुसरो के विद्रोह तथा बंगाल, बिहार, उड़ीसा और क%छ में हुए विद्रोहों का सफलतापूर्वक दमन किया। उसने मेवाड़, काँगड़ा और किश्तवार पर विजय प्राप्त की। दक्षिण भारत में विजय हेतु उसने कई अभियान किए, किन्तु स्थायी रूप से सफल नहीं हो सका। सम्राज्य में आन्तरिक कलह और शाहजादा खुर्रम के विद्रोह के कारण कन्धार मुगलों के हाथ से निकल गया। इससे मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को गहरा आघात लगा। शेर अफगन की हत्या, जहाँगीर का नूरजहाँ से विवाह, नूरजहाँ की महत्त्वाकांक्षा और शासन सत्ता पर उसका सम्पूर्ण प्रभुत्व स्थापित हो जाना, नूरजहाँ गुट का निर्माण एवं परिणामस्वरूप मुगल दरबार गुटबन्दी, विद्रोहों और षड़यंत्रों का केन्द्र बन जाना, जहाँगीर का विलासिता और मद्यमान में डूबे रहने से राजकार्यों एवं प्रशासन के प्रति उदासीनता, जहाँगीर द्वारा धार्मिक क्षेत्र में सहिष्णुता की नीति का अनुसरण, उसकी न्यायप्रियता, कला और साहित्य को संरक्षण तथा उसके चारित्रिक पक्ष आदि विविध तथ्यों का समालोचनात्मक विवेचन इस कृति में सन्निहित है।

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ एवं संस्थाएँ

सिंह, राजेन्द्र 81-7132-340-5 2007 600.00

शीलादित्य सम्राट हर्षवर्द्धन एवं उसका युग (467 से 810 ई. तक)

नाहर, वी. 978-81-7910-422-4 2013 995.00

पुस्तक का केन्द्रीय विषय सम्राट हर्षवर्द्धन है। साथ ही 467 से 810 ई. तक के उत्तर भारत के राजवंशों एवं सम्राटों के विषय में, जिसे वर्तमान में अंधकार का युग माना जाता है, तथ्यात्मक सामग्री उपलब्ध करवायी गई है। सम्राट हर्ष वीर, साहसी, कुशल राजनीतिज्ञ, मर्यादित महत्त्वाकांक्षी, उदार चरित्र, धार्मिक, सामाजिक सहिष्णु, लोक कल्याण में समर्पित, कुशल प्रबन्धक, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों में दृढ़ आस्थाशील एवं अद्‌भुत दानी एक अद्वितीय शासक हुए हैं। इस काल में भारतीय व्यवस्था, आर्थिक समृद्धता, उच्च नैतिक स्तर, राष्ट्रीय भावों से ओत-प्रोत संस्कारित राष्ट्र-जीवन की झलक के स्पष्टता से दर्शन होते हैं। चक्रवर्ती गुप्त साम्राज्य के पतन 550 ई. के उपरान्त भी मगध में 700 ई. तक वे उत्तरापथनाथ बने रहे। हूणों का उन्मूलन एवं उनका भारतीयकरण करने का श्रेय गुप्त सम्राटों एवं विशेष रूप से सम्राट भानुगुप्त बालादित्य एवं मालवा नरेश कुमारमात्य यशोधर्मा को है। परवर्ती गुप्त वंश चक्रवर्ती गुप्त सम्राटों के ही रक्त सम्बन्धी थे। इनका पूर्व पुरुष कृष्णगुप्त का पिता गोविन्दगुप्त चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का बड़ा पुत्र वैशाली का प्रशासक था। चक्रवर्ती गुप्तों की रिक्तता को हर्ष ने भरा, हर्ष के पश्चात् की रिक्तता को गुप्त सम्राट आदित्यसेन ने, उनके पश्चात् की रिक्तता को भरा मौखरी सम्राट यशोवर्मन ने उसके पश्चात् कर्कोट नागवंश के सम्राट ललितादित्य मुक्तापीड़ एवं उनके पोते सम्राट विनयदित्य जयापीड़ 550 से 810 ई. तक निरन्तर उत्तरापथ के सम्राट हुए हैं। उक्त सभी विषयों पर तथ्यात्मक सामग्री के साथ तार्किक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सामग्री लेखक ने संकलित की है।

हिन्दी पत्रकारिता : इतिहास एवं संरचना

जैन, रमेश 81-7910-176-2 2014 600.00

समग्र गांधी दर्शन : गाँधी चिन्तन और वर्तमान प्रसंग

रत्तू, के.के. 978-81-7910-275-6 2009 650.00

स्वदेशी एवं गाँधी चिन्तन

चतुर्वेदी, एस. 978-81-7132-551-1 2014 525.00

प्राचीन भारत का वृहत इतिहास, तीन भागों में

नागोरी, एस.एल. 978-81-7132-506-1 2007 2500.00

प्रस्तुत पुस्तक 'प्राचीन भारत का वृहत् इतिहास' मौलिक ग्रन्थों को आधार बनाकर आलोचनात्मक दृष्टिकोण से लिखी गई है। प्रस्तुत ग्रन्थ को कालक्रम की दृष्टि से तीन भागों में विभक्त किया गया है। इसके प्रथम भाग में भारतीय इतिहास की भौगोलिक परिस्थितियों से लेकर वैदिक युग की ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है। ग्रन्थ के द्वितीय भाग में नंद वंश से लेकर गुप्त साम्राज्य तक के इतिहास का विशद् विवेचन प्रस्तुत किया गया है। तृतीय भाग में हर्ष से लेकर भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना होने तक के इतिहास को समेटने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों के गहन अध्ययन के लिए प्रत्येक भाग के अन्त में एक विस्तृत संदर्भ ग्रन्थ सूची एवं कुछ ऐसे परिशिष्ट दिये गये हैं, जिनका प्राचीन भारत की किसी भी एक पुस्तक में मिलना नितान्त दुर्लभ है।

संस्कृति के संदर्भ

माथुर, के. 81-7132-424-X 2005 600.00

सामन्तवाद एवं किसान संघर्ष

शर्मा, बी.के. 81-7132-043-0 1993 250.00

भारतीय इतिहास का वैदिक युग

नागोरी, एस.एल. 978-81-7132-534-4 2008 850.00

प्रस्तुत पुस्तक ''भारतीय इतिहास का वैदिक युग'' प्रामाणिक ग्रन्थों को आधार बनाकर शोध पद्धति से लिखी गई है। इस पुस्तक में भारतीय इतिहास की भौगोलिक परिस्थितियों से लेकर वैदिक युग तक की ऐतिहासिक घटनाओं पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक में भारत की भौगोलिक स्थिति का उसके इतिहास पर प्रभाव, प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत, सिन्धु घाटी की सभ्यता, आर्यों का मूल निवास स्थान, वैदिक सभ्यता आदि विषयों का विशद् विवेचन किया गया है। यही नहीं उपनिषद्, रामायण एवं महाभारत, भगवद्‌गीता, भारतीय परिवार एवं प्राचीन भारतीय दर्शन आदि विषयों को भी अत्यन्त सरल भाषा में रोचक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन एवं हिन्दू धर्म आदि विषयों का भी सजीव चित्रण किया गया है। पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए ख्यातनाम इतिहासकारों के सन्दर्भ दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तक के अन्त में पाँच ऐसे परिशिष्ट दिये गये हैं, जिनका प्राचीन भारत की किसी भी पुस्तक में मिलना नितान्त दुर्लभ है।

AUTHORS INVITED

We welcome new and established authors of text and reference books on Humanities & Social Sciences